# इकाई 3 शिकारी-संग्रहकर्ता समाज*

## इकाई की रूपरेखा


3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 पुरापाषाण काल की जीवन शैली एवं अधिवास स्वरूप

- 3.2.1 शिकार एवं भोजन की तलाश
- 3.2.2 गैर-उपयोगितावादी व्यवहार
- 3.2.3 पुरापाषाण कालीन पाषाण कला और प्रथाएँ

3.3 मध्य पाषाण काल

- 3.3.1 पाषाण कला के स्थल
- 3.3.2 स्थल-विशेष अध्ययन – भीमबेटका
- 3.3.3 उत्खनन
- 3.3.4 पाषाण चित्रकला
- 3.3.5 इन चित्रों का निर्माण क्यों किया गया?
- 3.3.6 भीमबेटका पाषाण कला समूह परिसर का वर्गीकरण

3.4 सारांश

3.5 शब्दावली

3.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.7 संदर्भ ग्रन्थ


## 3.0 उद्देश्य

इस इकाई में, आप निम्न बातों को सीखेंगे :

- प्रागैतिहासिक जीवन शैली, बस्तियों का स्वरूप, उपकरण;
- पुरापाषाण कालीन लोगों के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए उपलब्ध पुरातात्विक और कला साक्ष्यों के प्रकार;
- उच्च पुरापाषाण कालीन कला एवं मध्य पाषाण कालीन कला; और
- भारत के पुरापाषाण कालीन और मध्य पाषाण कालीन संस्कृतियों की क्षेत्रिय विविधता।

## 3.1 प्रस्तावना

मनुष्य उपकरण बनाने की अपनी क्षमता के कारण अन्य पशुओं से श्रेष्ठ दर्जा प्राप्त कर लेता है। मनुष्य पत्थर, लकड़ी, हड्डियों व सींग के बने औजार से शिकार कर अपना भरण-पोषण करता है। औजार निर्माण की इसी क्षमता से संस्कृति का पोषण होता है। वह घर बनाना, आग का प्रयोग, कपड़े पहनना, एवं अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए प्रतीकों एवं चिन्हों के साथ-साथ भाषा का भी आविष्कार करता है, यद्यपि लिपि का नहीं। मनुष्य के इतिहास के इस अवधि को प्रागैतिहासिक काल कहते हैं। साथ ही, मनुष्य की जीवनशैली

*यह इकाई एम.ए.एन. (MAN)-002, खंड 5 और 6 से ली गयी है।

के पुनर्निर्माण करने वाले साक्ष्य औजार ही हैं जो मुख्यतः पत्थरों से बने होते हैं जो इतने समय बाद में भी उपलब्ध हैं। कृषि और धातु की खोज से पहले, मानव विकास की लंबी अवधि को पुरापाषाण काल और मध्य पाषाण काल की संस्कृति कहते हैं। दोनों शिकारी एवं भोजन संग्रहण की संस्कृतियों को दर्शाते हैं। इन संस्कृतियों के बीच के अंतरों की पहचान औजारों से की जाती है, जिसे उद्योग कहते हैं।

इस इकाई में, हम भारतीय प्रायद्वीप के पुरातात्विक स्थल, बस्ती के प्रकार, कला साक्ष्य, औजार एवं उपकरण के माध्यम से पुरापाषाण काल एवं मध्य पाषाण काल के लोगों के जीवन निर्वाह की संस्कृतियों का अध्ययन करेंगे।

## 3.2 पुरापाषाण काल की जीवन शैली एवं अधिवास स्वरूप

पुरापाषाण संस्कृति का विकास भूवैज्ञानिक युग में हुआ जिसे प्रातिनूतन युग (Pleistocene period) कहा गया। जलवायु को देखते हुए प्रातिनूतन युग की विशेषता हिमरूप (अत्यधिक ठंठी तथा व्यापक बर्फ का आवरण) तथा अंतर हिमनदों (गर्म काल) को बताया गया है। यह अवस्था समशीतोष्ण क्षेत्र में तथा वर्षा संबंधी (अत्यधिक वर्षा या नमी वाली अवधि) और अंतर वर्षा संबंधी (सूखा काल) की अवस्था ऊष्णकटिबंधीय क्षेत्र में रही। शुरुआती मानव जनसंख्या (पुरापाषाण) अधिकतर शीतोष्ण क्षेत्रों (यूरोप) और ऊष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों (अफ्रीका और एशिया) में जलवायु घटनाओं एवं परिवर्तन को सफलतापूर्वक अपनाकर रहते थे।

पुरापाषाण काल के तथ्य दर्शाते हैं कि लोग पानी के स्रोतों, पहाड़ों एवं खाद्य पदार्थ उपलब्ध होने योग्य इलाकों में रहते थे। ये छोटे-छोटे शिकारी एवं संग्रह करने वाले समुदाय थे जो अपने जीविकोपार्जन के लिए पशुओं एवं पौधों पर निर्भर थे। पत्थरों के बने औजार इनके रोजमर्रा के महत्वपूर्ण अंग थे। इनका इस्तेमाल ये काटने, छोटे-छोटे टुकड़े करने, खुरचने, छेद करने, पतले टुकड़े करने, छीलने इत्यादि व तक्षण के लिए करते थे। कुछ कार्य जीवन यापन से तथा कुछ शिल्प से जुड़े हुए थे। इन उपकरणों के माइक्रोवियर (सूक्ष्म परिक्षण) विश्लेषण से पता चलता है कि इनके उपयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जाता था। उदाहरण के लिए, उनवीक्षण यंत्र (माइक्रोस्कोप) से इन उपकरणों के किनारों पर घिसने और टूटने के निशान मिले हैं, जिससे वैज्ञानिक स्पष्ट रूप से बताते हैं कि इनका प्रयोग वनस्पति, गैर-वनस्पति पदार्थ, लकड़ी या बाँस पर हुआ है। कुछ औजारों पर घिसने के निशान मिलते हैं जिससे पता चलता है कि उनको मूठ में लगाने में इस्तेमाल किया गया था।

पुरापाषाण काल के शिकारियों ने भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न पर्यावरणीय स्थलों पर कब्जा कर लिया एवं उसके अनुकूल ढल गए। पुरापाषाण काल के लोग मध्यप्रदेश के भीमबेटका में, संघाव की गुफाओ में (उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान) या आंध्र प्रदेश के कर्नूल के शैल आश्रयों में रहते थे। उन्होंने खुले में, शाखाओं के बने आश्रयों में, घास, पत्ते या बेंत से निर्मित अस्थायी घरों में अपना डेरा डाला। इनका साक्ष्य पर्याप्त मात्रा में नहीं मिला है क्योंकि पत्तों के बने घर ज्यादा दिन तक टिक नहीं पाए। हालांकि, पत्थरों से निर्मित औजार के साक्ष्य बस्तियों की पुष्टि करते हैं। जे. एन. पाल तथा वी. डी. मिश्रा के नेतृत्व में एक टीम ने पहाड़ियों के ढलान पर तथा पथरीली चट्टानी सतहों पर जो कैमूर नदी क्षेत्र के बाहरी किनारे और जो बेलन नदी के समीप था, 17 एशूलियन स्थल खोजे है। इस क्षेत्र में अबरक पत्थर आसानी से उपलब्ध था तथा कार्यशाला स्थल भी थे। सामान्य रूप से उपलब्ध चट्टानों का उपयोग औजार बनाने में किया जाता था। यह स्थान मानवनुमा (hominin) समूहों के लिए उपयुक्त था जहाँ से शिकार पर नज़र रखना सहज था।

अधिकतर स्थल पानी के स्रोतों के नजदीक थे। 1970 के दशकों से लेकर आज तक, प्रो. के. पदैय्या के शोध से उत्तरी कर्नाटक में हुंस्गी तथा बैचबल घाटी में 400 पुरापाषाण काल के स्थलों का पता चला है। एशूलियन स्थल का उत्खनन हुंस्गी में हुआ जो एक अनावृत स्थल है। ग्रेनाइट के शिलाखंडों से घिरा अंडाकार आकार का खुला स्थान मनुष्यों द्वारा उनकी गतिविधियों के लिए चुना गया। प्रो. पदैय्या ने निष्कर्ष निकाला है कि पहले से ही शिलाखंडों का प्रयोग हवा से बचने के लिए होता आया है तथा इससे कृत्रिम आश्रयों को बनाना आसान था। जलस्रोत के किनारे पड़ाव सुनिश्चित था क्योंकि नदी में बारहमासी बहाव बना हुआ था। देवपुर धारा के तल में सोते पहले भी सक्रिय रहे होंगे। घाटी में जल बहाव पूरी तरह से संगठित नहीं था और हुंस्गी नदी में ही कई उथली व लटे रूपी धाराएं थी जो बहुत उच्च स्तर पर बह रही थी। पठार की तरह घाटी भी कांटों व झाड़ियों की घनी जंगल की वनस्पति से ढँकी हुयी थी; इस तरह की वनस्पति लोगों को शिकार और संग्रहण जैसे उद्यमों में सहूलियत प्रदान करती होगी। अभी तक, ऐसा कोई साक्ष्य नहीं मिला है जिससे यह पता चले कि एशूलियन काल में प्राकृतिक भोजन की सुविधाओं की उपलब्धता क्या थी। बाद के आंकड़ों से पता चलता है कि इन क्षेत्रों में जंगली पौधों एवं शिकारयुक्त पशु मानव उपभोग के लिए मिलते थे। इसके अलावा, इस घाटी में चूना पत्थर संकोणाश्म (breccia) और बजरी जमाव भारी मात्रा में पाए जाते थे जिसका इस्तेमाल कच्चे माल के रूप में होता था। इसलिए, हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि इस घाटी ने एशूलियन झुंडों के लिए काफ़ी उपयुक्त आवास स्थल का गठन किया।

पुरातत्व स्थलों के प्रकार : साधारणतः, स्थल आम लोगों की क्रियाकलापों को प्रस्तुत करते हैं। आवासीय स्थानों पर, लोग खाना बनाते, रहते और अपना समय चित्रकारी तथा उत्कीर्णन जैसे कामों में बिताते थे। उदाहरण के लिए, हुंस्गी और भीमबेटका जैसे लंबी अवधि के स्थलों की अपेक्षा अस्थायी शिविर स्थल थे। उत्तरवर्ती श्रेणियों ऐसे स्थलों को दर्शाती है जिसे साल में एक बार अपने अधिकार में लिया जाता था, और उसके बाद लोग पलायन कर जाते थे। विशिष्ट कार्य स्थल भी मिलते है, जैसे कसाई खाना स्थल – यहाँ पशुओं से माँस तथा चमड़ों को निकालने का काम किया जाता था। इसी तरह, उद्योग स्थल वैसे स्थान थे जहाँ चकमक पत्थरों से औजार बनाए जाते थे।

प्राचीन समाजों का संगठन लोगों के दल के रूप में होता था। ये 100 से कम लोगों का एक छोटा दल हुआ करता था, जो शिकार तथा भोजन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान का भर्मण करते थे। लगातार घूमने के कारण समूह का आकार छोटा रहता था, क्योंकि बच्चे स्थान परिवर्तन में बाधा उत्पन्न करते थे। इस प्रकार, आवश्यकतानुसार, उनके आकार छोटे ही रह गये।

ऐसी सामान्य धारणा है कि शिकारी एवं भोजन संग्रहण वाले लोग खाने के मोहताज होते थे, जिनके पास अवकाश के लिए कोई वक्त नहीं होता था। यह धारणा गलत है। पुरापाषाण कालीन शिकारी और संग्रह करने वाले लोग एक सीमा से अधिक भोजन जमा नहीं करते थे क्योंकि उनके पास भोजन को सुरक्षित रखने के लिए कोई तकनीक नहीं थी और उनकी भौतिक लालसा व उनकी ज़रूरतें सीमित थी। यह स्पष्ट है कि ज्योंही उनके लिए पर्याप्त भोजन का इंतजाम हो जाता उनके जीवन निर्वाह संबंधी गतिविधियों वहीं रूक जाती और उनके सोने, खेलने, बात करने, चित्रकारी एवं आराम करने के लिए पर्याप्त समय होता था।

प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल ने शिकार एवं संग्रहण को जीवन निर्वाह का एक सक्षम साधन बना दिया। यही कारण है कि, कुछ आधुनिक समुदायों में भी, शिकार और

संग्रहण एक प्रमुख साधन है, भले ही छोटे पैमाने पर ही क्यों न हो। आधुनिक शिकारी एवं संग्रहकर्ता पर नृवैज्ञानिक अध्ययन दर्शाता है कि ऐसे लोगों की भोजन संबंधी आवश्यकताओं में संग्रह की गतिविधियों का ज्यादा योगदान होता है। साधारणतः महिलाएँ संग्रह करती हैं, और पुरुष शिकार। यदि पुरापाषाण काल में भी ऐसा ही था, तो उस समय के लोगों के जीवन-निर्वहन में महिलाओं ने अहम् भूमिका निभाई होगी।

### 3.2.1 शिकार और भोजन की तलाश

संपूर्ण पुरापाषाण युग साधारण आर्थिक संगठन द्वारा संचालित था जिसमें जंगली पौधों का संग्रहण और जंगली जानवरों का शिकार शामिल था। व्यापक रूप से स्वीकृत तर्क के आधार पर, भारत के विभिन्न पारिस्थितिकीय या भौगोलिक क्षेत्र प्रातिनूतन काल में मौजूद समृद्ध पशु जीवन और वनस्पति की पुष्टि करते हैं, इससे सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है कि पुरापाषाण युग के लोगों को व्यापक पैमाने पर मांसाहारी एवं शाकाहारी भोजन उपलब्ध था। इस संबंध में, पुरातात्त्विक साक्ष्य कुछ रोचक तथ्य प्रस्तुत करते हैं।

पिछली सदी के मध्य से, स्तनधारियों के जीवाष्म भारी मात्रा में प्राप्त किए गए हैं, जो कृष्णा, गोदावरी, नर्मदा और अन्य नदियों से प्राप्त पाषाण औजारों के साथ मिले हैं। इन खोजों ने नई व्याख्या को जन्म दिया कि प्रारंभ में मनुष्यों ने जंगली पशुओं, हिरण और अन्य स्तनधारी पशुओं का उपयोग भोजन के लिए किया। इस व्यवस्था की पुष्टि तमिलनाडु में अतिरमपक्कम, महाराष्ट्र में चिरकी-नेवासा, हुंस्गी और बैचबल घाटी में हेब्बल बुजुर्ग और फतेहपुर, तेग्गीहाली, इसमपुर के प्राथमिक एशूलियन स्थानों से प्राप्त जंगली पशुओं, हिरण, जंगली घोड़े, जंगली हाथी दांत, अस्थियों के अवशेषों से होता है। इन अस्थियों पर बने निशान इस बात के सूचक हैं कि उनका प्रयोग भोजन के लिए किया गया था। ये अस्थि-अवशेष या तो शिकार किए गए पशुओं के थे या माँस भक्षी जानवरों के मारे जाने वाले स्थान से बरामद किए गए थे। आगे, इसमपुर जैसे स्थलों से प्राप्त कछुए के खोल के टुकड़े के मिलने से पता चलता है कि पाषाण युग के लोगों ने विभिन्न प्रकार के जीवों, कीड़े-मकोड़े, पक्षियों, मछलियों, चूहों, और उभयचरों का साधारण संग्रह रणनीति के अंतर्गत, शोषण किया था।

अब यह स्थापित हो चुका है कि पौधों से प्राप्त भोजन भी पाषाण युग के लोगों के आहार में शामिल था। डी. डी. कोसाम्बी ने 1965 में बताया था कि भारत जैसे उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों के लोगों ने बड़े पैमाने पर जंगली पौधों से प्राप्त भोजन जैसे फल, बीज, जामुन तथा कंद-मूलों का इस्तेमाल किया। प्रागैतिहासिक काल के विद्वानों ने भी पाषाण युग के स्थलों से प्राप्त पौधों के अवशेषों के महत्ता को समझा है। एम. डी. काजले ने श्रीलंका में स्थित बेली-लेना किटुलगला गुफा के मध्यपाषाण काल (लगभग 10,000 से 8000 बी.सी.ई.) से ब्रैड गेहूं एवं दो केलों के अवशेषों की खोज की है। इसके अलावा, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के आदिवासी समूहों एवं अन्य वंचित तबकों के क्षेत्रीय-पुरातात्त्विक अध्ययनों से पता चलता है कि विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ, कंद-मूल, जड़, जामुन, फल और गोंद इत्यादि का प्रयोग खाने के लिए किया गया था।

### 3.2.2 गैर-उपयोगितावादी व्यवहार

पुरातात्त्विक रिकॉर्ड में निम्न पुरापाषाण काल के समुदायों से संबंधित व्यवहारों के पहलुओं जैसे कि ज्ञानात्मक और कलात्मक क्षमता वाले और व्यक्तिगत अलंकरण के गैर-उपयोगी साक्ष्य मिले हैं। इससे यह भी पता चलता है कि हाथ की कुल्हाड़ी और विदारकों का निर्माण उत्क्रमण और पूरे-भाग संबंधों के विकसित संज्ञानात्मक सिद्धांतों के प्रयोग को दर्शाते हैं।

विकसित ज्ञानात्मक क्षमता भूमि इस्तेमाल के विभिन्न पहलुओं में भी दिखाई देती है। इनमें घाटियों जैसे स्थलाकृतिक स्थानों का चयन अधिवास के लिए आवास के रूप में, जल स्रोतों और खाद्य संसाधनों की मौसमी उपलब्धता की पहचान और कार्यशाला कम शिविर स्थलों के लिए उपयुक्त स्थानों के रूप में कुछ चट्टानी-क्षेत्रों की पहचान शामिल है।

एशूलियन समूह में कुछ हस्त-कुल्हाड़ी, विशेष रूप से नुकीले, डिंब और गर्भनाल आकार के बेहद महीन व पतले नमूने आकार और सौंदर्यशास्त्रीय रूप में मनभावन है। अतः, इस संभावना को खारिज नहीं किया जा सकता कि इनके निर्माताओं ने इसे काफ़ी मूल्यवान माना। मध्य भारत में भीमबेटका, डरकी चटन एवं अन्य गुफाओं से प्राप्त पत्थरों के स्लैब पर पाए जाने वाले प्यालिका नुमा गड्ढे व सरल उत्कीर्णन की व्याख्या पुरातत्वविदों ने एशूलियन समूहों की कलात्मक रचनाओं के रूप में की है।

शरीर सज्जा के भी कुछ प्रमाण मिले हैं। बैचबल एवं हुंस्गी घाटी के एशूलियन स्थलों पर कुछ लाल या गेरूए रंग के टुकड़े भी मिलते हैं। शायद, ये आस पास से ही मिले थे, जिसे शरीर को रंगने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

**विशेष अध्ययन-हुंस्गी**

के. पदैय्या द्वारा उत्तरी कर्नाटक के हुंस्गी एवं बैचबल घाटी में चार एशूलियन स्थलों की खुदाई की गई है। हुंस्गी घाटी के हुंस्गी स्थल V एवं VI पर क्षरित ग्रेनाइट पाषाण तल में 20-30 सेमी. का मोटा स्वस्थानी सांस्कृतिक स्तर संरक्षित मिलता है; यह 50 सेमी. से अधिक के तलछट निक्षेप से ढँका था। स्थानीय जलधाराओं के तल से ऊपर चट्टानी ऊँचे स्थानों पर बसेरा किया गया एवं लकड़ी के तनों एवं शाखाओं से एक अस्थायी आश्रय का निर्माण रहने के लिए किया गया। हुंस्गी स्थल VI के मुख्य गड्ढे (63मी.$^2$) में चूनापत्थर के 291 पुरावशेषों के समूह मिले हैं।

दो प्रमुख स्थल श्रेणियों – पहला हुंस्गी घाटी के नजदीक और दूसरा बैचबल घाटी में येदियापुर के नजदीक – दो या तीन किमी. में विस्तृत 15 से 20 स्थल हैं और ये दोनों श्रेणियाँ बारहमासी जलस्रोतों से जुड़ी हुयी है जो सोते की धार से निकलता है। बचे हुए स्थान पूरी घाटी के सतह के चारों तरफ़ बिखरे पड़े हैं। जल स्रोतों के साथ-साथ जंगली पौधों एवं पशुओं की मौसमी उपलब्धता (भोजन के रूप में) के साथ इनके अंतर्संबंधीय वितरण को ध्यान में रखते हुए, पदैय्या ने अनुमान लगाया कि इन क्षेत्रों में एशूलियन आवासीय व्यवस्था दो प्रमुख मौसम संबंधी प्रबंधन की रणनीतियों पर टिकी हुई थी। इनमें हैं : 1) वृहत् शिकार की संभावना और दोनों घाटियों (सोते से भरे हुए) में शुष्क मौसम में सभी एशूलियन समूहों के बारहमासी जल स्रोतों के नजदीक एकत्रीकरण, 2) घाटी सतहों के चारों ओर छोटे-छोटे समूहों में जनसंख्या का वर्षा ऋतु में बिखराव, छिछले बारिश के पानी पर निर्भरता, एवं हरी पत्तेदार, शाक-सब्जियों, फलों, जामुनों और बीजों इत्यादि का मौसम के अनुरूप भोजन में उपयोग। यह भी अनुमान लगाया गया कि अल्पविधि के लिए एशूलियन समूहों ने अपनी जनसंख्या को छोटे-छोटे आठ या नौ समूहों या आवासीय श्रृंखला को बनाकर घाटी के चारों तरफ़ बसाया था।

**स्रोत**: पदैय्या इत्यादि, 1999-2000

### 3.2.3 पुरापाषाण कालीन पाषाण कला और प्रथाएँ

जिसे आज प्रागैतिहासिक कला कहा जाता है, वह या तो पत्थरों या अस्थियों पर उकेरे गए थे। कहीं-कहीं, मिट्टी, कोयला, सीप दंत एवं सींगों का भी प्रयोग मिलता है। इन गतिशील वस्तुओं पर निर्मित कला को ''घरेलू कला'' या ''घूमंतू कला (art mobilier)'' कहा जाता है। गुफाओं और चट्टानी आश्रयों, छतों एवं दीवारों पर निर्मित कला को ''गुफा कला'' या ''आर्ट पेराईटल'' कहा जाता है।

नक्काशी एवं चित्रकारी के अलावा, मिट्टी और अस्थियों के राख के मिश्रण से निर्मित अनेक कला नमूनों के उदाहरण मिलते हैं। ये उत्तरवर्ती उदाहरण प्रागैतिहासिक कलाकारों के विलक्षता को दर्शाते हैं। यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि किसी वस्तु को नमूने के रूप में प्रदर्शित करने का कौशल नक्काशी या चित्रकारी की प्रतिभा से कहीं अलग है।

भारतीय पुरापाषाण काल में शुतुरमुर्ग के अंडे के मनके और नक्काशी के टुकड़ों के रूप में वहनीय कला (Portable art) के उदाहरण मिलते हैं। मध्यप्रदेश में खापरखेड़ा (नर्मदा घाटी) और रामनगर (चंबलघाटी), भीमबेटका III A-28; राजस्थान में चन्द्रसाल और कोटा (चंबल घाटी); और महाराष्ट्र में पटनी प्रमुख स्थल हैं। कुछ अंडों की परतों का काल निर्धारण किया गया है। पटनी – 25,000 बी.पी.; चन्द्रसाल (राजस्थान) की दो तिथियाँ निर्धारित की गई – 38,900 और 36500 बी.पी; रामनगर (मध्य प्रदेश) – 31000 वर्ष बी.पी.। पटनी से प्राप्त अवशेष के टुकड़ों पर मानवों द्वारा बहुत पहले लकीरों की आड़ी-तिरछी नक्काशी मिलती है। शुतुरमुर्ग के अंडों के छिलकों से मनके एवं आभूषण तैयार किए गए थे। इनमें से कुछ के भीतर छेद थे जिनमें से माला पिरोई जाती थी। एकतालीस (41) भारतीय स्थलों से प्रातिनूतन युग के संदर्भ में 39,000 से 25,000 बी.पी. तक के इन मनकों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। भीमबेटका और पटनी में उच्च पुरापाषाण काल के शुतुरमुर्ग के अंडों से निर्मित मनके प्राप्त हुए हैं। पटनी के मनकों का व्यास 10 मीमी. एवं भीमबेटका से प्राप्त मनकों के व्यास 5 मीमी. है। उपिंदर सिंह ने भीमबेटका शैल आश्रयों से उच्च पुरापाषाण काल के कब्र के संदर्भ में शुतुरमुर्ग के अंडों के छिलकों से बनी माला के पाए जाने का उल्लेख किया है, जो दफनाए गए आदमी के गले और खोपड़ी से बरामद हुआ है। वह अवश्य ही विभिन्न तरह के मनकों की माला पहनता होगा; अन्य सभी नष्ट हो गए हैं, लेकिन दो शुतुरमुर्ग के अंडों के छिलकों से निर्मित मनकों के अवशेष बच गए।

> पेट्रोग्लिफ्स् : जब चट्टानी सतह से उसके कुछ हिस्सों को नक्काशी, चोट मारकर, हथौड़े से मारकर, उत्कीर्णन या खोदकर हटा दिया जाता है।
>
> स्रोत : उपिंदर सिंह, 2008

भीमबेटका की गुफाओं और शैल आश्रयों से भित्ति कला के महत्वपूर्ण उदाहरण मिलते हैं। यहाँ से प्राप्त शिला चित्र, जो चरण-1 के है, उच्च पुरापाषाण काल के हैं। इन चित्रों में हरे और लाल रंग के समानांतर प्रतिनिधित्व करने वाले बड़े जानवरों जैसे गैंडा, जंगली गवल, जंगली भैंस, प्राचीन हाथी और जंगली सूअरों के चित्र मिलते हैं। वहां डंडी नुमा मानव आकृतियों भी हैं।

पुरापाषाण कालीन कला के संदर्भ में, यह सुनिश्चित कर पाना मुश्किल है कि यह एक नियमित प्रक्रिया की हिस्सा थी या एक प्राकृतिक प्रथा। उपिंदर सिंह ने कुछ वस्तुओं का उल्लेख किया है जो अनुष्ठानीय प्रक्रिया का हिस्सा हो सकती है। उत्तर प्रदेश के बेलन घाटी के लोहण्ड नाला में प्राप्त क्षतिग्रस्त उच्च पुरापाषाण काल के नक्काशी किए गए हड्डी की वस्तु जिसे कुछ लोगों द्वारा मातृदेवी की मूर्ती के रूप में तथा कुछ लोगों द्वारा

बर्छी/भाले के रूप में पहचान की गई। कर्नूल की एक गुफा से जानवरों के दाँत पाए गए हैं जिसमें खांचे हैं जो यह संकेत देते हैं कि उसको किसी धागे से जोड़ा गया होगा या आभूषण के रूप में इसका इस्तेमाल हुआ होगा। भीमबेटका से चकमक चक्र और मैहर (प्रयागराज के दक्षिण-पश्चिम) से मुलायम बालू पत्थर के चक्र मिले हैं जो एशूलियन से संबंधित माने जाते हैं जिसकी प्रथानुसार अनुष्ठानिक महत्ता है। भीमबेटका के गुफा III-F 23 से 'ऑडिटोरियम गुफा' के होने के प्रमाण मिले हैं (चित्र 3.1) (उपिंदर सिंह, 2008)।

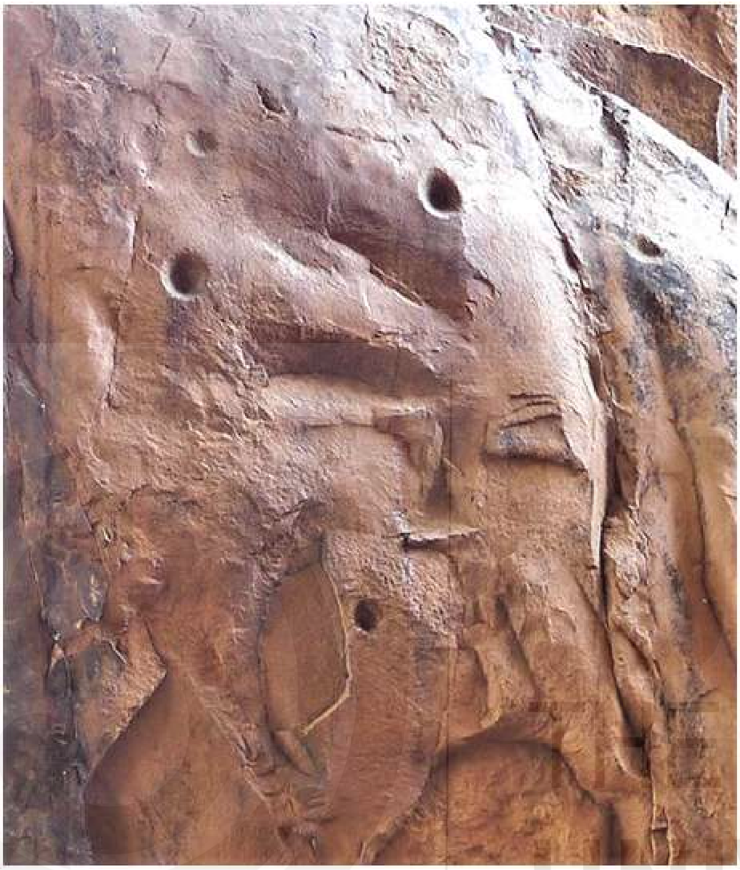

**चित्र 3.1: ऑडिटोरियम गुफा, प्यालियाँ नुमा गड्ढे। भीमबेटका। श्रेयः दिनेश वाल्के। स्रोत : विकीमिडिया कॉमन्स। (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Bhimbetka_-_Auditorium_Cave_-_The_cupules_1.jpg).**

निम्न और मध्य पुरापाषाण काल की बीच की अवधि से संबंधित 25 मी. लंबी एक सुरंग है जो एक हॉल/सभागार की तरफ़ जाती है जहां पर तीन प्रवेश द्वार हैं। इस गुफा के बीच में एक बहुत बड़ी चट्टान है। इस चट्टान का सपाट एवं लंबवत् सतह जो सुरंग की तरफ़ है, इसमें प्याली जैसी सात गड्ढे हैं जो 16.8 मीमी. से अधिक गहरे हैं। इस चट्टान से कुछ दूरी पर एक दूसरी चट्टान है जहाँ इसके घुमावदार/सर्पाकार रेखाओं जैसी सतह पर एक और प्यालीनुमा बड़ा गड्ढा है। विद्वानों का मत है कि अनेक प्यालीनुमा गड्ढों वाली चट्टान एक घंटे की तरह कार्य करता था जिस पर बार-बार प्रहार से गड्ढे हो गए थे। संभवतः यह पूरी प्रक्रिया किसी परंपरा या अनुष्ठान का हिस्सा रही होगी।

मध्यप्रदेश के बागोर I से उच्च पुरापाषाण काल का 'पवित्र स्थल' मिला है जिसका तिथि निर्धारण 9000-8000 बी.सी.ई. की गयी है। इसमें एक गोल मंच भी मिला है। यह लगभग 85 सेमी. के व्यास वाले बलुआ पत्थर के टुकड़ों से बना है जिसपर एक प्राकृतिक चट्टान का टुकड़ा भी रखा है। इस पर हल्की पीले रंग से लेकर लाल एवं गहरे लाल रंग में गाढ़ा संकेद्रित त्रिकोणीय लेप की परत मिली है। इस मंच के आसपास इसी पत्थर के नौ टुकड़े भी मिलते हैं। जब इन दस पत्थर के टुकड़ों को जोड़ा गया तो 15 सेमी. ऊँचा, 6.5 सेमी.

चौड़ा और 6.5 सेमी. मोटा एक त्रिकोण संरचना का निर्माण होता है। यह त्रिकोणीय पत्थर सीधे मंच के ऊपर रखा गया होगा। कैमूर पहाड़ियों के कोल और बैगा प्रजाति के नृविज्ञान अध्ययन से ज्ञात होता है कि वे आज भी ऐसे मंच का निर्माण करते हैं और इस त्रिकोणीय पत्थर को मातृशक्ति के प्रतीक के रूप में पूजा करते हैं।

**बोध प्रश्न 1**

1) पुरापाषाण काल के लोगों के जीवन निर्वाह की मुख्य पद्धति क्या थी?

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

2) पुरापाषाणकालीन कला पर टिप्पणी करें।

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

## 3.3 मध्य पाषाण काल

मध्य पाषाण काल मानव प्रजाति से संबंध रखने वाली एक सांस्कृतिक काल है जो अपने जैविक विशेषताओं में आधुनिक थे तथा होमोसेपियंस् के रूप में जाने जाते थे। इस काल में माइक्रोलिथ की उपकरण प्रौद्योगिकी का विकास हुआ जिसे बड़े पैमाने पर बनाया और इस्तेमाल किया गया। वे संयुक्त उपकरण थे जिन्हें दाँतेदार किनारा बनाने के लिए मूठ या सरे से जोड़ा गया था। भारतीय मध्य पाषाण अपनी पाषाण कला के लिए विश्व में जाना जाता है। मध्य पाषाणिक अर्थव्यवस्था, पुरापाषाण काल जैसी ही थी जो शिकारी तथा खानाबदोश जीवन यापन पर आधारित थी। लेकिन कुछ स्थलों से पशुपालन के भी साक्ष्य मिले हैं। मध्य पाषाण काल के दौरान, जनसंख्या बढ़ी, लोग नये परिस्थितिकीय क्षेत्रों में बस रहे थे। घरेलू फर्शों, मानव कब्र, रिंग स्टोन, और मिट्टी के बर्तनों के साक्ष्य मिलते हैं। संवाद और गतिशीलता भी उन समुदायों में होने की बात कही गई है।

**पाषाण कला :** जिन गुफाओं में, खुली चट्टानों पर जहां हमारे पूर्वजों ने आश्रय बनाया, कला के हस्ताक्षर मिले हैं, इसे पाषाण कला व पुरातन कला कहा जाता है। इसे शिलाचित्र (पेट्रोग्राफ) और नक्काशी, प्याली (पेट्रोग्लिफ) के रूप में देखा जा सकता है। इन शिलालेखों या चित्रों से मानव मस्तिष्क के उद्भव को समझने का एक अनोखा अवसर प्राप्त होता है एवं परिस्थितिकीय संरचना में समाज के भौतिक संस्कृति के अध्ययन के स्रोत भी मिलते हैं।

यह अभी तक स्पष्ट नहीं है कि 'होमो इरेक्टस', हमारा पूर्ववर्ती मानव प्रजाति, निम्न पुरापाषाण काल के दौरान कला को विकसित कर पाए थे या नहीं, हालांकि उन्होंने परिष्कृत एवं सुंदर पत्थर के औजार बनाए थे जो नर्मदा घाटी के जमाव में देखे गए हैं, जो स्वभाव से उपयोगितावाद से कही अधिक थे और निश्चय ही सौंदर्य के मानक थे। व्यापक पैमाने

पर देखा गया कि आधुनिक मानव प्रजाति, होमोसेपियंस, के उद्भव के साथ ही लगभग 1,50,000 वर्ष पहले उच्च पुरापाषाण काल के दौरान मानव के मस्तिष्क का तेजी से मनोजैविक विकास हुआ और हमारी प्रजाति ने बहुत जल्दी विचारों एव अभिव्यक्ति के श्रेष्ठ अमूर्त रूप को ग्रहण कर लिया। इस क्षमता का विकास अगले पाषाण युग, जिसे मध्य पाषाण काल कहा जाता है, में तेजी से हुआ जिसमें व्यावहारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आधुनिकता की अभिव्यक्ति दृश्य प्रस्तुति, विभिन्न प्रकार की कला एवं कलात्मक कौशल, व मध्य पाषाणकालीन कला के रूप में हुई।

### 3.3.1 पाषाण कला के स्थल

पाषाण कला वृहत् रूप में उत्तर, पश्चिम, पूर्व और भारत के दक्षिण भागों तक सीधे लद्धाख से लेकर, जम्मू कश्मीर, मणिपुर, हिमाचल प्रदेश से तमिलनाडु और केरल तक विस्तृत है। लेकिन, अधिकतर पाषाण कला के स्थल मध्य भारत में है, मुख्यतः छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्यप्रदेश और उडिशा। ऐसा इस क्षेत्र के अनूठे भौगोलिक पर्यावरण के कारण है जिससे मध्य भारत के पठारी क्षेत्रों में प्राचीन मानव संस्कृति के विकास को मदद मिली। विंध्य और सतपुड़ा पहाड़ी क्षेत्रों में, जो मध्य नर्मदा घाटी को सीमित करती है जहाँ पाषाणकालीन मानव का विकास हुआ, सबसे अधिक संख्या में पाषाण कला स्थल हैं। विंध्य और सतपुड़ा पहाड़िया इस तरीके से खंडित और बिखरे हैं जिससे प्राकृतिक रूप से बड़े-बड़े पहाड़ों में शैल आश्रय और गुफा मिलते हैं (चित्र 3.2)।

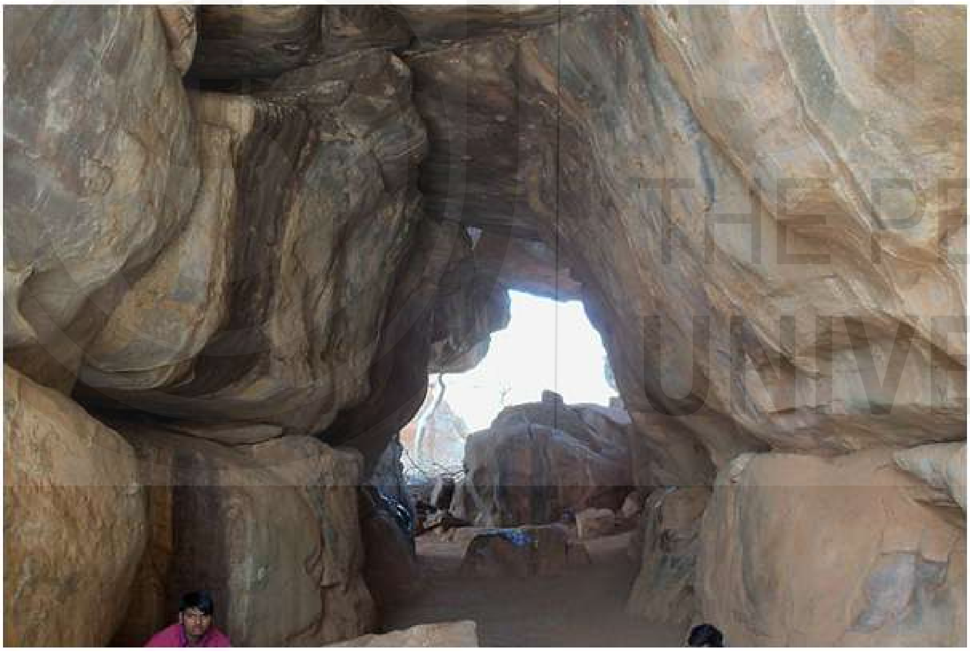

**चित्र 3.2 : प्रागैतिहासिक शैल आश्रय। एएसआई स्मारक न. N-MP-225। श्रेयः नुपुर। स्रोत : विकीमिडिया कॉमन्स। (https://commons.wikimedia.org/wiki/Category:Rock_shelters_of_Bhimbetka#/media/File:Bhimbetka_caves.jpg).**

इन आश्रयों पर प्राचीन शिकारियों, खानाबदोशों एवं पशुपालकों द्वारा आसानी से कब्जा किया गया जिनके वंशज जैसे कि गोड, मुरिया, कोरकु, भिलाला इत्यादि आदिवासी समुदाय आज भी आंशिक खेती कर अपने पारंपरिक शैली में जीते हैं। विंध्य में भीमबेटका शैल आश्रय एवं सतपुड़ा में आदमगढ़ एवं पंचमढ़ी सबसे महत्वपूर्ण पाषाण कला स्थल माने जाते हैं। इसके अलावा छत्तीसगढ़ में दरकी चट्टान ओर झारखंड के हजारीबाग, गिरीडीह और कोडरमडा, चतरा क्षेत्र में और अनेक ऐसे स्थल हैं जो हाल के दिनों में डा. (कर्नल) ए. के. प्रसाद के प्रयासों के माध्यम से थोड़े मशहूर हुए हैं। भीमबेटका, पंचमढ़ी और आदमगढ़ उच्च

पुरापाषाण काल से होते हुए मध्यपाषाण काल, नवपाषाण, ताम्रयुग और प्राचीन ऐतिहासिक काल तक पुराने हैं।

### 3.3.2 स्थल-विशेष अध्ययन – भीमबेटका

भीमबेटका पाषाण कला स्थल मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में, 22°56′ उत्तर, 77°36′ पूर्व, भोपाल के 45 किमी. दक्षिण और होशंगाबाद के 30 किमी. उत्तर-पश्चिम में है। भीमबेटका, भियनपुर के आदिवासी गाँव के नजदीक स्थित, एक बड़े चट्टानी पर्वत का नाम है। यह पहाड़ी मध्य भारत की पर्णपाती झाड़ियों से ढँकी हुई विंध्य पहाड़ियों का हिस्सा है। यह पहाड़ी एक वर्ग किमी. क्षेत्र के साथ, विघटित अखंड चट्टानों के ऊपर है, जिस पर लगभग 800 प्रागैतिहासिक शैलकृत आश्रयों एवं गुफाओं के परिसर हैं। जहाँ एक तरफ़ सभी आश्रयों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्यकाल के चित्र हैं, उनमें से कुछ आश्रयों में पत्थरों के औजार, बर्तन, ताँबा और लौह उपकरण, पत्थर के मनके, शैलखटी (steatite), प्रकाचित मिट्टी के बर्तन (Faience) और पकी मिट्टी के वस्तुएं पशु एवं मनुष्य के अस्थियों के अवशेष के रूप में अतीत के मानव गतिविधियों के साक्ष्य भी मिलते हैं।

यह स्थल नजदीक से एक विशाल किला या गढ़नुमा पर्वत खंडों की तरह दिखता है। भीमबेटका के आधे से अधिक चित्रकारी शैलकृत आश्रय पहुँच के भीतर है, लेकिन कुछ तक घने जंगल में जंगली पशुओं के होने के कारण पहुँचना संभव नहीं।

**भीमबेटका नाम क्यों?**

भीमबेटका के विशाल चट्टान का नामकरण महाभारत के बलशाली पात्र भीम के नाम पर है, अर्थात् भीम के बैठने की जगह (भीमबैक); धारणा के अनुसार पांडव इन गुफाओं में ठहरे थे।

भीमबेटका का प्रथम उल्लेख भारतीय पुरातत्व रिकार्ड (1888) द्वारा एक बौद्ध स्थल के रूप में होता है। हालांकि, इसके शैलचित्रों की खोज 1957-58 में उज्जैन के एक पुरातत्वविद डॉ. विष्णु वकांकर द्वारा की गई है।

भीमबेटका की पहाड़ियाँ अबरक तथा बालूपत्थर की है। भीमबेटका तथा इसके आसपास 1000 मीमी. वार्षिक वर्षा होती है। इसके कारण से पहाड़ियाँ घनी वनस्पति से आच्छादित हैं। यहाँ नजदीकी बारहमासी स्रोतों के अतिरिक्त, अतीत में अन्य जलस्रोतों का भी इस्तेमाल होता था। यह स्थान आज भी वनस्पति की विविधता के लिए जाना जाता है। कम से कम तीस प्रकार के ऐसे पौधे पाए जाते हैं जिनका इस्तेमाल कंदमूल, जड़ों एवं फलों के रूप में होता है।

हिरण, जंगली सूअर, नीलगाय, चीता, भेड़िया, खरगोश और लोमड़ी जैसे जानवर सामान्यतः पाए जाते हैं। नदियों में प्रचुर मात्रा में मछली मिलती हैं। प्रागैतिहासिक काल में, स्थिति थोड़ी अलग अवश्य रही होगी, लेकिन फिर भी उस समय वनस्पति एवं जीवों की प्रचुरता रही होगी। इन पहाड़ियों में औजार निर्माण करने वाले अबरक पत्थर (Quartzite) का विपुल भंडार मिलता है, जिसमें क्वार्टज और सिलिका खनिज के स्रोत मिले हैं, और जिसका उपयोग औजार या उपकरण बनाने में किया जाता था। इसी कारण से अतीत में यह स्थान शिकारियों एवं संग्रहकर्ता समुदायों को आकर्षित करता था। आश्रय, भोजन, पानी और कच्चे सामग्री के लिए संसाधन आसानी से उपलब्ध थे। यहाँ अधिकतर औजार पीले अबरक पत्थर से निर्मित किए जाते थे। हालांकि कुछ औजार काले/सलेटी अबरक पत्थर से निर्मित किए जाते थे, जो संभवतः सुदूर इलाकों से मँगाए जाते थे।

निम्न पुरापाषाण काल से जुड़ा हुआ समतल चट्टानों से निर्मित पाँच फर्शों की पहचान की गई थी (उपिंदर सिंह, 2008, पृ. 71)। अम्लीय मिट्टी की उपस्थिति के कारण, कोई भी अस्थि अवशेष बच नहीं पाए। 1970 ई. में जेरोम जैकब्सन ने 90 एशूलियन स्थलों का पता एक छोटी घाटी में लगाया जो मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में बालूपत्थर की पहाड़ियों से घिरा हुआ था। इससे मुख्यतः जाड़े के मौसम में बसावट का पता चलता है, शिकारी एवं खानाबदोश समूह वर्षा के मौसम में भीमबेटका पहाड़ियों के निकटवर्ती शैल आश्रयों में चले जाते थे।

### 3.3.3 उत्खनन

बी. एस. वकांकर ने सात तथा वी. एन. मिश्रा ने तीन आश्रयों की खुदाई की। एक आश्रय, IIIF-24 या ऑडोटोरियम गुफा, में वकांकर को प्राचीन एशूलियन संस्कृति और पूर्व-एशूलियन काटने एवं चाकू औजार के साक्ष्य मिले। दूसरे आश्रय, IIIF-28, में उन्हें एशूलियन आवासीय क्षेत्र को बड़े-बड़े पत्थरों से निर्मित घेरती हुई दीवार मिली। अन्य कई आश्रयों में, उन्हें मध्य पुरापाषाण काल, उच्च पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल, आरंभिक ऐतिहासिक और मध्यकालीन अवधि के औजार मिले। कुछ आश्रयों में, उन्हें मानव अस्थियाँ मिली जो जीवाष्म बन चुके थे।

वी. एन. मिश्रा ने तीन आश्रयों की खुदाई की : IIIF-15, IIIF-23 और IIB-33। इनमें IIIF-23 मुख्यतः मध्य पाषाण कालीन है। मध्य पाषाण कालीन निवास पत्थरों की दीवारों व चट्टानों से दो भिन्न संरचना में विभाजित है। जहाँ पूर्व-मध्य पाषाण कालीन औजार अबरक पत्थर से निर्मित थे, मध्य पाषाण कालीन औजार पूर्णतः क्रिप्टो-क्रिस्टलाईन सिलिका पदार्थ से निर्मित थे। दूसरे दर्जे की कब्र से प्राप्त अस्थियों को आश्रय के फर्श पर रखा गया है। IIIF-13 आश्रय से चूल्हे की राख, चाक निर्मित मृद्भांड के टुकड़े, सूक्ष्म औजार एवं पत्थर के उपकरण प्राप्त हुए हैं।

आश्रय IIIF-33 में 1.5 मी. का बसावट का निक्षेप मिला है और इसका विशेष संबंध मध्य पाषाण काल से है। इस निक्षेप से बहुत विकसित ज्यामीतीय माइक्रोलिथ (अति सूक्ष्म उपकरण) के साक्ष्य मिले हैं, जैसे अनेक पीसने के पत्थर, कुछ घिसे हुए बारह सिंगों व हड्डियों के टुकड़े, और कुछ गेरूआ रंग के टुकड़े। इन सभी का संबंध प्राथमिक स्तर की कब्रों से था जो एक दूसरे के ऊपर थे। इस निक्षेप से बहुत कोयला भी मिला जिसका प्रयोग, PRL और BSIP प्रयोगशालाओं में तिथि-निर्धारण के लिए किया गया है। 2000 से 8000 बी.पी. की अनेक तिथियाँ इस कोयले से प्राप्त हुई हैं।

इन सभी आश्रयों से मध्य पाषाणकाल के शिकारी संग्रहण और व्यवस्थित किसानों के आपसी संपर्क के प्रमाण मिले। इन प्रमाणों में ताँबे के उपकरण, चित्रित बर्तन, पत्थर, शैलखटी (steatite), प्रकाचित मिट्टी, पकी मिट्टी, अकीक पत्थर और इंद्रगोप के मनके, शंख की चूड़ियाँ, चीनी मिट्टी और शीशा शामिल है।

### 3.3.4 पाषाण चित्रकला

भीमबेटका के 642 शैल आश्रयों में से 400 में चित्र, नक्काशी, उत्कीर्णन और चित्रकारी मिली है। ये चित्र भारतीय उपमहाद्वीप के मानव जीवन के सबसे प्राचीन निशानों को दर्शाते हैं। भीमबेटका शैल आश्रय में मध्य से लेकर उच्च पुरापाषाण काल के मानव रहते थे, जिसका प्रमाण यहाँ के पत्थरों के औजार से मिलता है। इन क्षेत्रों में पुराने समय से आदिवासी आज भी रहते आ रहे हैं। 2003 ई. में यूनेस्को द्वारा इसे विश्व धरोहर के रूप में महत्वपूर्ण स्थल

घोषित किए गया। सोमनाथ चक्रवर्ती और यशोधरा मथपाल के अनुसार, भीमबेटका में लगभग 6214 अनुमानित शैल कला कृतियाँ हैं। कुछ आश्रय जैसे जू-रॉक, वाईल्ड बोर, और क्रैब IIIF-9 और रंगमहल विशेष रूप से चित्रों में समृद्ध हैं।

ये चित्र चट्टान के दीवारों, खाली जगहों और छतों पर पाए गये हैं। वे लाल, सफेद, पीले, और कहीं-कहीं काले रंगों में निर्मित हैं (चित्र 3.3, 3.4, 3.5, 3.6 और 3.7)। भीमबेटका की चित्रकला में पशुओं का चित्रण (पशुकला) (Zoomorph) के साथ-साथ मानव चित्रों के साथ जानवरों के झुंड की प्रधानता है। ये विभिन्न प्रकार के पशुओं को दर्शाते हैं, जिनमें बैल, गौर, भैंस, नीलगाय, काला हिरण, बारहसिंगा, सांभर, चीतल, हॉग हिरण, बारकिंग हिरण, हाथी, गैंडे, बाघ, चीता, लकड़बग्घा, भेड़िया, सियार, लोमड़ी, साही, बंदर और चूहे शामिल हैं। इनका चित्रण अकेले या समूहों में बैठे, खड़े, चलते और दौड़ते मुद्रा में किया गया है। इन पशुओं के चित्रण में सजीवता है, ये गतिशील एवं जीवंत दिखाई देते हैं।

भीमबेटका में अंर्तसामूहिक संघर्षों का प्रतिनिधित्व करने वाले चित्रों में तीरंदाजों के शिकार के दृश्य की श्रृंखला उल्लेखनीय है। शिकार के चित्रों में भाला, डंडे, तीर और धनुष, विभिन्न प्रकार के जाल, मछली फँसाने वाले जाल, कंदमूल को खोदते हुए, और मधु निकालने वाले जाल जैसे औजार एवं उपकरण मिलते हैं। छोटे-छोटे जानवर थैले और टोकरी में रखकर और कंधों या पीठ पर टाँगकर शिविरों में लाए जाते थे। जंगली सूअरों जैसे पवित्रिकृत जानवरों का चित्र मिलता है, जो कई आश्रयों में पाया जाता है।

उत्तवर्ती चित्रों में मानव तस्वीर और पारंपरिक या धार्मिक प्रतीकों और शंखों पर अभिलेखों के साथ ज्यामितीय चित्रण भी मिलता है। नृत्य और छतरी नुमा केश सज्जा के साथ घुड़सवारी करते योद्धा, मधु संग्रह, मछली पकड़ने, जंगली सूअरों के शिकार इत्यादि को दर्शाया गया है।

**चित्र 3.3 : शैल आश्रय 3 में चित्र, भीमबेटका। श्रेय : विजय तिवारी। स्रोत : विकीमिडिया कॉमन्स। (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Cave_Paintings_Bhembetika_(23)e.jpg).**

**चित्र 3.4 : शैल आश्रय 9 में चित्र, भीमबेटका। श्रेय : बर्नार्ड गैग्नॉन। स्रोत : विकीमिडिया कॉमन्स। (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Rock_Shelter_9,_Bhimbetka_03.jpg).**

**चित्र 3.5 : शैल आश्रय 15 में सींग वाले सूअर, भीमबेटका। श्रेय : बर्नार्ड गैग्नॉन। स्रोत : विकीमिडिया कॉमन्स। (https://en.wikipedia.org/wiki/Bhimbetka_rock_shelters#/media/File:Rock_Shelter_15,_Bhimbetka_02.jpg).**

**चित्र 3.6 : भीमबेटका के मध्य पाषाण कालीन पाषाण चित्रकला। श्रेय : यन्न फॉरगेट। स्रोत : विकीमिडिया कॉमन्स। (https://mr.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9A% E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0: Rock_painting,_Bhimbetka,_Raisen_district,_MP.jpg).**

**चित्र 3.7 : मध्य पाषाण कालीन पाषाण चित्रकला, भीमबेटका। श्रेय : w:User:LRBurda। स्रोत : विकीमिडिया कॉमन्स। (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Bhimbetka_rock_paintng1.jpg).**

इनमें सींग, पाइप, ड्रम और ढिंढोरा पीटने वाला ड्रम के संगीत वाद्ययंत्रों का चित्रण मिलता है। हम हाथ के चिन्हों, अँगूठों के निशान, हाथ और अंगुलियों के निशान को भी देख सकते हैं। कुल मिलाकर, इनकी आज के सिरे पर रहने वाले कृषक वर्ग एवं भोजन संग्राहक के जीवन निर्वाहन व्यवस्था के साथ समानता देखने को मिलती है।

ये चित्र विभिन्न स्तरों में लाल और सफेद रंगों को दर्शाती है। हरे रंग के चित्रों को प्राचीनतम माना जाता है, हालांकि हेमटैट (लाल रंग) का इस्तेमाल सामान्य था। प्राचीनतम सतह अधिकांशतः जंगली पशुओं के चित्रों को दर्शाती है जो या तो लाल या हरा/सफेद रंग में दर्शाये गये हैं। संभवतः, चारकोल या मैंगनीज से काले रंग को बनाया जाता था जो बाद में इस्तेमाल किया गया।

## 3.3.5 इन चित्रों का निर्माण क्यों किया गया?

यह माना जा सकता है कि इन चित्रों का इस्तेमाल गुफाओं को सजाने और मनोरंजन के लिए हुआ। के. एल. कामत मानते हैं कि उनमें से कई आश्रय सुनियोजित तरीके से नहीं बनाए गए थे। ये चित्रकलाएँ दर्शाती हैं कि पुराने चित्रों को नष्ट करना या मिटाना भी ज़रूरी नहीं समझा गया। इन रेखाचित्रों का निर्माण एक के ऊपर एक, कई स्तरों में होता गया। हम उन्हें उनके रंग और शैली से अलग कर सकते हैं। अधिकतर, इनका प्रयोग मुसीबतों से राहत के लिए तथा अलौकिक शक्तियों के प्रति आस्था व्यक्त करने के लिए किया गया क्योंकि लाल, हरा और सफेद रंगों का इस्तेमाल मृत व्यक्तियों को सजाने के लिए किया गया था। कुछ चित्रों को बनाने में अँगुलियों, कुछ को पंखों (पक्षियों के), लकड़ी या मोर के पंखों या साही के काँटों का इस्तेमाल शैली या संरचना के अनुसार किया गया। अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता के साथ, प्रागैतिहासिक काल के लोगों ने अपने जीवनकाल को सामान्य रूप से प्रदर्शित किया जिसमें दो या तीन बार में ही हाथ के स्पर्श से और बाद में चिन्हों से पशुओं व पक्षियों को बनाया गया। कुछ चित्र एकदम सीधी रेखा में है, जबकि कुछ को बारीकी से निर्मित किया गया। दिलचस्प बात है कि भीमबेटका में उत्कीर्ण आकृतियां मध्य भारत में पंचमढ़ी और अन्य स्थलों के बनिस्पत लगभग नगण्य हैं।

**भीमबेटका का महत्व**

भीमबेटका प्रागैतिहासिक तकनीक, आर्थिक, जीवविज्ञान और कला के मामले में अभूतपूर्व महत्व का पुरातात्विक स्थल है। 800 से अधिक शैल आश्रय और गुफाओं के साथ यह विश्व का सबसे बड़ा समूह है। यहाँ से विश्व की सबसे सुंदर और समृद्ध प्रागैतिहासिक कला के उदाहरण मिलते हैं। ऐतिहासिक क्रम के अनुसार, इन चित्रों को दो भागों में बांटा जा सकता है : प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक। प्रागैतिहासिक चित्रों में जंगली जानवरों, शिकार, मछली पकड़ने इत्यादि के दृश्य को दिखाया गया है। रोजमर्रा के जीवन, नृत्य, गाना, वाद्य यंत्र बजाना, जन्मोत्सव एवं दुःख मनाने के चित्र कम हैं। ऐतिहासिक चित्रकला में सजे हुए हाथी व घोड़ों के जुलूस, तलवारों, ढालों, भालों, धनुष और तीर के दृश्य हैं।

## 3.3.6 भीमबेटका पाषाण कला समूह का वर्गीकरण

चित्रकला में विभिन्न रंगों का इस्तेमाल किया गया है। इन रंगों को प्राकृतिक रूप से पीसकर बनाया जाता था जिसमें पौधों के रसायन के साथ जानवरों के खून को मिलाकर बनाया जाता था। लाल रंग को आयरन ऑक्साइड (गेरू), सफेद चूना पत्थर से तथा हरे रंग को हरे चकमक पत्थर से बनाया जाता था। कुछ चित्र एक ही रंग में हैं (मोनोक्रोम) जबकि अन्य चित्र अनेक रंगों में है (पॉलीक्रोम)। इन चित्रों में बहुत अधिक गतिविधियों को दर्शाया गया है। इन चित्रों में लिंग आधारित श्रम का विभाजन दिखाया गया है। पुरुषों को शिकार करते और महिलाओं को भोजन तैयार एवं संग्रह करते दिखाया गया है। यशोधरा मथपाल और अन्य विद्वानों ने अनुक्रमिक चरणों का वर्णन किया है। ये नौ चरण निम्नांकित हैं :

**प्रागैतिहासिक**

**चरण I** : वृहताकार जानवर (भैंस, हाथी, बड़ी बिल्ली व जंगली मवेशी) सीमांकित व आंशिक रूप से ज्यामितीय और भूल भुलैया पैटर्न से भरा; कोई मानव नहीं है।

**चरण II** : जानवरों तथा मानवों की छोटी आकृतियां, प्रकृति एवं जीवन से भरपूर; अधिकांश समूहों में शिकारी; हिरण प्रधान; S आकृति वाले अनुशगों में लाल, सफेद एवं चमकीला हरा रंग, नृत्य करते मानव।

**चरण III** : ऊर्ध्वाधर धारियों और मनुष्यों के साथ बड़े आकार के जानवर।

**चरण IV** : सुनियोजित एवं सरल आकृतियां।

**चरण V** : सजावटी। ''लंबे सींगों वाले जानवरों'' को मधुकोष, आड़ी तिरछी, गोलाकार चौकोर पैटर्न में शरीर की सजावट के साथ बारीक पतली रेखाओं में खींचा गया है।

**संक्रमणकालीन (कृषि जीवन की शुरुआत)**

**चरण VI** : पहले से बिल्कुल भिन्न; पारंपरिक तथा योजनाबद्ध; कठोर पैरों के साथ एक आयत में जानवरों का शरीर; गोजातीय पर कूबड़, कभी-कभार ऊपर सींग की बनावट; बैलगाड़ी एवं रथ के साथ जुते बैल।

ऐतिहासिक

**चरण VII** : घुड़सवार और हाथी पर सवार; नर्तक समूह; गाढ़ा लाल और सफेद रंग; कलात्मक कौशल का पतन।

**चरण VIII** : सैनिकों का जुलूस, हाथियों और घोड़ों पर सवार भाला धारी सरदार, तलवार, धनुष और बाणों से सुसज्जित योद्धा; आयताकार ढाल; घुमावदार; सजीले घोड़े; सीमांकित व सफेद रंग से भरे हुए।

**चरण IX** : ज्यामितीय मानव चित्र; डिज़ाईन; परिचित धार्मिक प्रतीक और अभिलेख।

**बोध प्रश्न 2**

1) भारत के दो प्रसिद्ध पाषाण कला स्थलों की चर्चा करें।

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

2) भीमबेटका के पाषाण कलाओं पर किन नमूनों का प्रभुत्व है? अन्य किस प्रकार के भाव निहित हैं?

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

## 3.4 सारांश

मानवशास्त्रीय सिद्धांतों की सहायता से हम प्रागैतिहासिक समाज के शिकारी समूहों का अध्ययन पुरातत्वशास्त्र के आधार पर कर सकते हैं। पुरापाषाण काल और मध्य पाषाण काल सामाजिक विकास के शिकार एवं संग्रह वाले चरण को प्रस्तुत करते हैं। जीवाष्म के अवशेष से पुरापाषाण काल एवं मध्य पाषाण काल के जीवन निर्वहन के तरीकों के बारे में महत्वपूर्ण सूचना मिलती है। पुरापाषाण काल के दौरान, लोग मुख्यतः शिकार एवं संग्रह चरण में ही थे। इस दौरान, लोग हाथी, बैल, नीलगाय, हिरण, जंगली सुअर एवं विभिन्न पक्षियों जैसे विशालकाय एवं मध्यम आकार वाले पशुओं का शिकार करते थे। उन्होंने भोजन के लिए पौधे के रूप में उगने वाले कंदमूल और फलों का भी इस्तेमाल किया। शिकार एवं संग्रह मध्य पाषाण काल के दौरान भी जारी रहा। मध्य पाषाण काल के दौरान, लोग छोटे जानवरों का शिकार एवं मछली पकड़ना शुरू कर चुके थे।

भीमबेटका चित्रकला मध्य पाषाण काल के शैल निर्मित चित्रकला का विशिष्ट उदाहरण पेश करते हैं। हिरण, चीता, तेंदुआ, बाघ, हाथी, गैंडा, बारहसिंगा, चीतल और गिलहरियों जैसे जानवरों के चित्र बनाए गए हैं। विभिन्न प्रकार के पक्षी, मछलियाँ, मेंढक, छिपकलियाँ, केकड़े एवं बिच्छुओं के साथ-साथ कीड़ों का भी चित्र मिलता है। हालांकि किसी भी साँप को नहीं दर्शाया गया। पाषाण कला एक अमूल्य साक्ष्य है जिससे उनके जीवन और

गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती है। मध्य पाषाण काल के लोगों ने पुराने युग के लोगों की तुलना में अधिक विभिन्न पारिस्थितिक स्थानों का इस्तेमाल किया। राजस्थान में बागोर एवं होशंगाबाद के नजदीक आदमगढ़ घाटी के मध्य पाषाण कालीन स्थलों से भेड़/बकरी एवं अन्य पालतू पशुओं के अस्थि अवशेष प्राप्त हुए हैं। भले ही इन साक्ष्यों के ऊपर सवाल खड़े किए गए हैं, हम यह मान सकते हैं कि इस काल से पशुपालन की शुरुआत हो गयी होगी।

## 3.5 शब्दावली

**क्यूपूल (प्याली नुमा गड्ढा)** : गोलार्ध, प्याले के आकार का, गैर-उपयोगितावादी, सांस्कृतिक निशान, जो मनुष्यों ने अपने हाथ से बनाया था।

**नृवंशविज्ञान** : पुरातत्वशास्त्र की एक शाखा जो समुदायों के रहन-सहन तथा उनके बर्तावों का अध्ययन करती है ताकि प्राचीन समुदायों से संबंधित पुरातात्विक साक्ष्यों की व्याख्या कर उनके अतीत के जीवन का पता लगाया जा सके।

**जीव-जंतु** : काल एवं क्षेत्र विशेष के संपूर्ण पशु वर्ग।

**निर्माण प्रक्रिया** : यह सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक दोनों प्रकार की घटनाओं से संबंधित है, जिस पर बसने के फलस्वरूप एक पुरातात्विक स्थल का निर्माण प्रभावित होता है।

**शिकार** : जंगली पशु, मछली एवं पक्षियों इत्यादि का भोजन के लिए किया गया शिकार।

**मानव (होमिनिम)** : सभी आधुनिक एवं विलुप्त मानवों एवं उनके पूर्ववर्ती वंशजों का समूह, विशेषकर चिम्पैंजी से अधिक मानवों से जुड़ी प्रजाति।

**स्वस्थानी (*in situ*)** : अपने वास्तविक जगह पर।

**माइक्रोवियर अध्ययन** : औजार या उपकरणों के इस्तेमाल को समझने वाले निशान का अध्ययन।

**बारहमासी** : जल धारा या स्रोत के रूप में सालों भर बहने वाला।

**आयत** : सभी चतुर्भुजों के बीच समकोण वाला चतुर्भुज।

## 3.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) शिकार तथा भोजन की तलाश। उपभाग 3.2.1 देखें।

2) विस्तार के लिए देखें उपभाग 3.2.3।

**बोध प्रश्न 2**

1) मध्यप्रदेश में भीमबेटका और सतपुड़ा में पंचमढ़ी। देखें उपभाग 3.3.1।

2) पशु कला। देखें उप भाग 3.3.4।

## 3.7 संदर्भ ग्रन्थ


ऑलचिन ब्रिजैट एंड ऑलचिन, रेएमंड (1982). *द राईज़ ऑफ सिविलाईज़ेशन इन इंडिया एंड पाकिस्तान.* केम्ब्रिजः केम्ब्रिज युनीवर्सीटी प्रैस।

मथपाल, वाई. (1995). *रॉक आर्ट पेन्टिंग्सं ऑफ भीमबेटका, सैन्ट्रल इंडिया.* नई दिल्लीः अभिनव पब्लिकेशनस।

मिश्रा, वी. एन. (1989). स्टोन ऐज इंडियाः ऐन इकोलोज़िकल पक्सपैक्टिव. *मैन एंड ऐन्वाइरमैंट,* 14: 17-64।

पदैय्या, के. अन्य (1999-2000). द सिग्नीफीकेंस ऑफ द एशूलियन साईट ऑफ इसमपुर, कर्नाटक. इन लोअर पैल्योलिथिक ऑफ इंडिया. *पुरातत्व,* 30, 1-24।

संकालिया, एच. डी. (1974). *प्रीहिस्ट्री एंड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान.* पूनाः डेक्कन कॉलेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इन्सटीटयूट।

वाकंकर, वी. एस एंड ब्रुक्स, आर. आर. आर. (1976). *स्टोन ऐज पेन्टिंग्स इन इंडिया.* बॉम्बेः तारापोरवाला एंड संस।